पुस्तकालय और समाज

श्री प्रदीप कुमार
पुस्तकालय परिचर

(किसी को कितनी उत्तम शिक्षा मिलती है, इसका पता इससे नहीं लगाया जा सकता कि उसके पास किसी विश्वविद्यालय की उपाधि है या नहीं, अपितु इस बात से लगाया जा सकता है कि उसे पुस्तकालय को उपयोग करना आता है या नहीं)

- सर साइरिल नारवुड

भूमिका

समाज के सर्वोन्मुखी विकास में पुस्तकालयों का महत्व पूर्ण योगदान है । गेराल्ड जानसन ने अपनी पुस्तक पब्लिक लाइब्रेरी सर्विसेज में लिखा है, " विश्व के सर्वोत्त्म विचारों को जानने का सबसे तेज और सबसे सरल माध्यम सार्वजनिक पुस्तकालय है ।'' (The quickest and easiest access to the world's best thought is through public library) पुस्तकालय विश्व के महानतम विचारों का आधार है, इसमें दो राय नहीं । विश्व के महानतम विचार पुस्तकों में संकलित होते हैं । इसलिए पुस्तकों को ईश्वर की महानतम कृति, अर्थात मनुष्य की महानतम कृति कहा गया है । पुस्तकालय ही एक ऐसा स्थान है जहाँ गहन ज्ञान से परिपूर्ण पुस्तकें व्यवस्थित रूप में पाठकों के उपयोग के लिए रखी जाती है । इस प्रकार मनुष्य के व्यक्तित्व के विस्तार में पुस्तकालयों का योगदान अनुपम है । पुस्तकालयों के योगदान की चर्चा मुख्यत : निम्नांकित दो बिन्दुओं के अंतर्गत की जा सकती है -

१. पुस्तकालय : शिक्षा एवं सूचना संचार का माध्यम

पुस्तकालय शिक्षा के प्रसार तथा सूचना के संचार का प्रभवाशाली माध्यम है । शिक्षा एक अनवरत प्रक्रिया है । जीवन के प्रारंभ से अंत तक मनुष्य शिक्षा की प्रक्रिया से गुजरता रहता है इस काम में मनुष्य दो प्रकार की शिक्षा ग्रहण करता है, औपचारिक तथा अनौपचारिक ।

औपचारिक शिक्षा और पुस्तकालय

औपचारिक शिक्षा (Formal education) के दौरान मनुष्य किसी विशेष पाठयक्रम के आधार पर किसी विशेष स्तर की शिक्षा प्राप्त करता है यह शिक्षा संस्थानों, जैसे विद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा शोध-संस्थानों के माध्यम से मिलती है । छात्र संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि , नए शैक्षिक संस्थानों की स्थापना, नए पाठयक्रमों का प्रादुर्भाव, शिक्षा का असीमित विस्तार, शिक्षण-पद्धति में नए प्रयोग, ज्ञान का विस्फोट, पुस्तकों की बढ़ती संख्या, ज्ञान का पुस्तकेतर रूप जैसे (विडियों टैप, माइक्रोफिल्म आदि) जिनके कारण औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में पुस्तकालयों का महत्व और भी बढ़ गया है । आज पुस्तकालय हर प्रकार के शिक्षण संस्थान का एक अपरिहार्य अंग बन चुका है । शिक्षाशास्त्री तथा विद्वान इस बात से सहमत है कि

'किसको कितनी उत्तम शिक्षा मिली है, इसका पता इससे नहीं लगाया जा सकता है कि उसके पास किसी विश्वविद्यालय की उपाधि है या नहीं, अपितु इस बात से लगाया जा सकता है कि उसे पुस्तकालय का उपयोग करना आता है या नहीं ।

औपचारिक शिक्षा पहले शिक्षकों की अभिभाषण पर आधारित थी । शिक्षक भाषण देते थे तथा छात्र उनको सुनकर कुछ याद करने का प्रयास करते थे । इस प्रकार शिक्षा एकमुखी थी, जिसमें छात्र कोई सक्रिय भूमिका नहीं निभा पाते थे । पर आज की शिक्षा एकमुखी नहीं रह गई है । आजकल शिक्षक छात्रों को पाठ की मूलभूत प्रकृति तथा मूलभूत विशिष्टताओं से अवगत कराकर उन्हें स्वयं पढ़ने के लिए प्रेरित करता है । कोई विश्वविद्यालय उतना ही अच्छा होता है जितना अच्छा उसका पुस्तकालय है ।

अनौपचारिक शिक्षा और पुस्तकालय

औपचारिक शिक्षा के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार की शिक्षा अनौपचारिक शिक्षा है । मनुष्य केवल विद्यालयों आदि में ही शिक्षा नहीं ग्रहण करता । दूसरी ओर विद्यालय महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त करने के बाद शिक्षा की प्रक्रिया समाप्त नहीं हो जाती । शिक्षा उसके पहले और उसके बाद भी चलती रहती है तथा मनुष्य उसे हासिल करने का प्रयास आजीवन करता रहता है । कुछ ऐसे लोग भी है जो किसी कारणवश औपचारिक शिक्षा से वंचित रह जाते हैं । छोटे-बड़े, बालक-वृद्ध, छात्र-विद्वान, व्यापारी, व्यवसायी, नौकरीपेशा आदि हर प्रकार के व्यक्ति पुस्तकालयों के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, और कर रहे हैं । औपचारिक शिक्षा ज्ञान का एक तालाब है, जिसकी सीमा होती है । परन्तु अनौप्चारिक शिक्षा ज्ञान का असीम सागर है । इस प्रकार की शिक्षा बेहतर रूप से किसी पुस्तकालय के माध्यम से ही मिल सकती है । इसीलिए पुस्तकालय को लोक विश्वविद्यालय भी कहा गया है । शिक्षा एक अनवरत प्रक्रिया है । इस दिशा में प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में पुस्तकालय काफी मदद कर सकता है । आजादी के बाद हमारे नेताओं का ध्यान धीर धीरे प्रौढ़ शिक्षा की ओर गया और पिछले कुछ दशकों से सरकार ने प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रम विशाल स्तर पर प्रारम्भ किये हैं । प्रौढ़ों को शिक्षा और सूचना दिलाने में पुस्तकालयों की महत्वपूर्ण भूमिका है । पाषाण युग से प्रौद्योगिक युग तक मानव जाति ने एक लंबी यात्रा तय की है । प्रौद्योगिक युग सूचना के स्तंभों पर टिका है और हमारा आज का समाज सूचनाओं पर आधारित समाज है । आज सूचना का उत्पादन इतनी तीव्र गति से हो रहा है जिसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है । जीवन का प्रत्येक क्षेत्र सूचना के समुद्र में डूबकियां लगा रहा है । इतनी अधिक गति से सूचनाएँ आने का यह परिणाम हुआ है कि मनुष्य जितना कुछ जानता जा रहा है उससे भी अधिक जानने को बचा रह जाता है । सूचना की इस बाढ़ को अनियंत्रित रखकर इससे लाभ नहीं उठाया जा सकता । इसलिए यह आवश्यक है कि सूचनाओं को नियंत्रित कर, उनका विश्लेषण कर, उन्हें विभिन्न वर्गीकृत विषयों में रखकर उनकी पुनर्प्राप्ति की व्यवस्था की जाए । यह कार्य केवल पुस्तकालय ही कर सकता है ।

पुस्तकालय औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए सहायक है । इसी कारण पुस्तकालयों में लोगों की रूचि बहुत बढ़ी है और हमारी यह मान्यता है कि बौद्धिक जीवन के महत्व तथा ज्ञान के मूल्यों में लोगों का विश्वास दृढ़ हुआ है । आज लोक पुस्तकालय को स्वस्थ मनोरंजन साहित्य उपलब्ध कराने का ही साधन नहीं माना जाता, बल्कि इसे अब राष्ट्रीय कल्याण की महान

संभावनाओं की प्रेरक शक्ति तथा शिक्षा एवं संस्कृति की प्रगति के मूल आधार के रूप में भी स्वीकार किया गया है।

२. पुस्तकालय एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था

सामाजिक संस्था मनुष्य के अंदर धार्मिक, नैतिक, बौद्धिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों को उत्पन्न कर उन्हें नीति तथा व्यवहार के साथ जीने की शिक्षा देती है। पुस्तकालय भी एक ऐसी ही सामाजिक संस्था है। किसी संस्था को सामाजिक तभी माना जा सकता है जब उसकी उत्पत्ति तथा उसका विकास समाज के साथ जुड़े हों तथा उसके उद्येश्य सामाजिक हो। साथ ही किसी सामाजिक संस्था को जीवित रहने के लिए नई सामाजिक व्यवस्था के अनुकूल स्वयं को ढालना भी पड़ता है तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं के साथ संबंध रखना पड़ता है। अत : किसी भी सामाजिक संस्था में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है :

i) सामाजिक उत्पत्ति और विकास

प्राचीनकाल में पुस्तकें हस्तलिखित होती थीं, उनकी सीमित प्रतियां उपलब्ध होती थीं, क्योंकि प्रतियां तैयार करना काफी कठिन तथा खर्चीला काम था। उन्हें राजा-महाराजा ही तैयार करवा सकते थे तथा उनकी सुरक्षा की व्यवस्था भी वें ही कर सकते थे। अगर हस्तलिखित ग्रंथो को बिना किसी व्यवस्था और सुरक्षा के रखने की इजाजत दे दी जाती तो आज हमारी सभ्यता के लिखित आलेख नष्ट हो गये होते। आज ये अभिलेख समाज के उपयोग के लिए उपलब्ध हैं, क्योंकि उनको सुरक्षित रूप से रखा गया था।

यह कहना भी सत्य नहीं है प्राचीन समय में पुस्तकों का उपयोग नहीं होता था। उस समय भी विद्वानों को उनके उपयोग की इजाजत थी इस प्रकार प्रारंभिक काल में पुस्तको तथा पुस्तकालयों की सुरक्षा करने का यह लाभ हुआ कि अपने शैशव काल में ये नष्ट नहीं हुए।

मुद्रण प्रणाली के विकास के साथ ही पुस्तकालयों के इस स्वरूप में परिवर्तन हुआ। पुस्तकों को मनचाही संख्या में मुद्रित किया जाने लगा और तब पुस्तकालयों को समाज के उपयोग के लिए खोल दिया गया। मुद्रण प्रणाली के साथ धर्म, जो एक सामाजिक विचारधारा है, ने भी पुस्तकालयों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। विभिन्न धर्मो ने अपने मत के प्रचार के लिए मुद्रित सामग्री बांटी तथा समाज का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए पुस्तकालयों की स्थापना की या उनकी स्थापना में सहयोग दिया। लोगो का ध्यान पुस्तक दान की ओर गया। मनु ने पुस्तक-दान माना है। साधन-संपन्न लोगों ने पुस्तकालयों को अपनी पुस्तकें दान देकर उन्हें धनी बनाया। ओद्यौगिक क्रांति, सार्वजनिक शिक्षा, पुस्तकालयोन्मुखी शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा तथ बौद्धिक मनोरंजन की विचारधरा ने पुस्तकालयों की स्थापना, विकास और उपयोगिता पर बल दिया। इसलिए यह कहा जा सकता है कि पुस्तकालय एक सामाजिक संस्था है क्योंकि इसकी उत्पत्ति तथा विकास समाज के योगदान से हुआ। सरकार भी समाज का एक बड़ा और सुनियोजित स्वरूप है। विभिन्न देशों और प्रदेशों की सरकारें भी पुस्तकालयों की स्थापना तथा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है।

ii) सामाजिक उद्देश्य

पुस्तकालयों का उद्देश्य पूर्णत: सामाजिक है । यहां पुस्तकों का प्रजातांत्रिक रूप में उपयोग किया जाता है । पुस्तकालय प्रत्येक धर्म, समुदाय, व्यवसाय, उम्र आदि की समान रूप से सेवा करते हैं । इसमें रखी पुस्तकों के उपयोग का समान अधिकार समाज के प्रत्येक सदस्य को है । इससे यह सिद्ध होता है कि पुस्तकालय एक सामाजिक संस्था है । यह समाज के स्वस्थ बौद्धिक विकास को सुनिश्चित करता है । इसके उद्देश्य सामाजिक तथा प्रजातांत्रिक हैं । पुस्तकालय विज्ञान के पॉच सूत्र भी इस विचारधारा को बल देते हैं ।

iii) सामाजिक व्यवस्था से अनुकूलन

पुस्तकालयों का स्वरूप कभी भी हठीला (rigid) नहीं रहा । ये स्वयं को सामाजिक व्यवस्था के अनुकूल ढालते रहे हैं । प्रत्येक सामाजिक संस्था में इस गुण का होना आवश्यक है तथा पुस्तकालय में यह गुण कूट-कूटकर भरा है । सामाजिक व्यवस्था के परिवर्तन के साथ ही पुस्तकालय ने मुक्त प्रवेश प्रणाली तथा नई तकनीकें अपनाई तथा पुस्तकालयों में जनसंपर्क एवं विस्तार - कार्य प्रारंभ् किए । आज पुस्तकालय समाज की बौद्धिक, मनोरंजनात्मक सूचनापरक तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति में संल्गन है ।

आधुनिक समाज में कंम्पयूटर एक महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है । मानव गतिविधि के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में कंप्यूटर का प्रवेश हो चुका है । पुस्तकालय भी समाज के इस आधुनिकीकरण के साथ स्वयं को आधुनिक बना रहे हैं तथा कंप्यूटर तथा अन्य नवीन उपकरणों एवं तकनीकों को अपनाने की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं । इन सारी बातों से स्पष्ट है कि पुस्तकालयों में सामाजिक व्यवस्था के अनुकूलन का गुण पूर्ण मात्रा में मौजूद है ।

iv) सामाजिक संस्थाओं से संबंध

आज का पुस्तकालय सहयोग की भावना में विश्वास रखता है । यह न केवल पुस्तकालय के बीच परस्पर सहयोग में विश्वास रखता है, बल्कि अन्य सामाजिक संस्थानों, जैसे शिक्षा संस्थाओं, सेवा संस्थाओं साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं से संबंध रखता है, उन्हें सहयोग देता है तथा उनसे सहयोग प्राप्त करता है ।

v) क्रियात्मकता

किसी सामाजिक संगठन को सदा क्रियाशील रहना चाहिए । निष्क्रियता उसकी मृत्यु को इंगित करती है । इस दृष्टि से पुस्तकालय एक स्वस्थ सामाजिक संस्थान है, क्योकि समाज की सेवा में यह सदा सक्रिय रहता है । पुस्तकालय विज्ञान का पंचम नियम (पुस्तकालय एक वर्द्धनशील संस्था है) इस बात को सिद्ध करता है ।

३. पुस्तकालयों को सामाजिक संस्था बनाने के उपाय

एक पुस्तकालय, विशेष रूप से लोक-पुस्तकालय, केवल अध्ययन केन्द्र ही नहीं बल्कि एक सामाजिक केन्द्र भी है । विश्व के विकासशील देशों में सार्वजनिक पुस्तकालय इस कार्य का पूरी तरह निर्वाह

कर रहे हैं । स्वयं को सामाजिक केन्द्र बनाने के लिए पुस्तकालय को अपनी गतिविधियों का विस्तार करना चाहिए । आज के पुस्तकालय का कार्य केवल पुस्तकों का आदान-प्रदान ही नहीं है, उसे विचार-कार्य तथा प्रचार-कार्य में भी रूचि लेनी है । समय-समय पर पुस्तक तथा अन्य प्रदर्शनियाँ आयोजित करना आदि कुछ ऐसी गतिविधियाँ है जिसे पुस्तकालय को सामाजिक संस्था का रूप मिलता है । अमेरिका तथा ब्रिटेन के पुस्तकालय इस प्रकार की गतिविधियों में बहुत पहले से रूचि ले रहे है । उदाहरणार्थ, सन् 1930 में अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन ने ऐसे नाटको की सूची बनाई जिनका मंचन पुस्तकालय-प्रांगण में किया जा सकता है । इंडियन लाइब्रेरी ऐसिएशन ने सन 1926 में एक्जिट मिस लिजी फॉक्स नामक नाटक का मंचन किया जो बहुत लोकप्रिय हुआ । इससे पुस्तकालयों की लोकप्रियता भी बढ़ी । पुस्तकालयों की लोकप्रियता बढ़ाने वाले तथा उन्हें सामाजिक संस्था का स्वरूप प्रदान करने वाले कुछ प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं ।

i) भाषण

पुस्तकालय-प्रांगण में समयनुसार शस्त्रीय साहित्य, संगीत, कला, लोकप्रिय साहित्य, अपने देश, राज्य, शहर, क्षेत्र, नैतिकता, समाज-कल्याण, शिशुओं के लालन पालन, पारिवारिक सामंजस्य, ज्वलंत समस्याओं (जैसे दहेज-प्रथा, सती-प्रथा, वधू-दहन के विपक्ष तथा परिवार नियोजन आदि के पक्ष) पर भाषण के कार्यक्रम आयेजन करना ।

ii) प्रदर्शनी

स्थानीय उत्पादन, जैसे- फल, फूल, सब्जी, स्थानीय कलाएँ जैसे -हस्तशिल्प, पेंटिंग, स्वस्थ बालक आदि संबंधित प्रदर्शनियाँ आयोजित करना । साथ ही समयानुसार विशेष महत्ववाले दिवसों, जैसे -स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, बाल दिवस, मजदूर दिवस आदि के असवर पर संबंधित विषयों पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित करना ।

iii) प्रदर्शन

नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम, गीत-संध्या आदि का पुस्तकालय- प्रांगण में आयोजन ।

iv) प्रतियोगिता

पुस्तकालय के तत्वाधान में या पुस्तकालय-प्रांगण में कला-प्रतियोगिता, गीत-प्रतियोगिता, काव्य-पाठ प्रतियोगिता, निबंध-प्रतियोगिता आदि का आयोजन ।

v) उत्सव

राष्ट्रीय, राजकीय, क्षेत्रीय उत्सवों का आयोजन । साथ ही विभिन्न क्षेत्रों के राष्ट्रीय, राजकीय तथा क्षेत्रीय नेताओं के जन्मदिन पर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन ।

vi) चल पुस्तकालय सेवा का प्रारंभ

vii) पुस्तकालय प्रचार

इन सारी गतिविधियों के लिए अपने क्षेत्र के साहित्यकार, शिक्षक, कर्मचारी तथा व्यवसायियों से सहयोग लिया जा सकता है।

निष्कर्ष

सारांश में कहा जा सकता है कि पुस्तकालय समाज के लिए अपरिहार्य है। ये व्यक्ति को शिक्षित करते हैं तथ सूचनाएं उपलब्ध कराकर उन्हें जागरूक और बेहतर नागरिक बनाते हैं। इस बात में तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं कि दुनिया में विभिन्न क्षेत्रों का नेतृत्व करने वाले व्यक्तियों में से अधिकांशतः उत्तम पाठक तथा सूचना-संपन्न व्यक्ति होते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति , पुस्तकालयों का उपयोग करने वाले , पुस्तकों के प्रेमी और पुस्तकालयों के प्रशंसक होते है। जिस समाज में पुस्तकालय संस्कृति संपन्न होगा उसमें प्रजातांत्रिक मूल्य अधिक प्रखर होगें। किसी ने सच ही कहा है कि अधिक संख्या में पुस्तकालय खोलकर पुलिस स्टेशनों की संख्या में कमी की जा सकती है।

****

जीवन संध्या

श्रीमती अंजू चौधरी
वरिष्ठ शोध सहायक

धूप में चलता हूँ मैं साया बनकर
दिल में लिए एक ख्वाहिश
मिल जायेगा कोई दरख्त छाया बनकर

खुद जलकर दी औरों को रौशनी
बस इतनी थी आरजू ,
कि रास्ता दिखायेगा कोई शमा बनकर

थक गया जब और लड़खड़ाए कदम,
पाया खुद को अकेला रिश्तों की भीड़ में
जीवन संध्या ने ये मजंर मुझे है दिखाया
दूर हो गये सब अपने, पराये बनकर
धूप में चलता हूँ मैं साया बनकर।
किससे करे शिकवा
और किस-किस बात का
दे गया कोई दर्दे दिल दवा बनकर ।।

****